एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

भिंडी के रोग तथा प्रबंधन

(*पुष्पेन्द्र सिंह शेखावत एवं पवन कुमार)
पादप व्याधि विज्ञान विभाग, कृषि अनुसंधान केन्द्र, श्रीगंगानगर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: shekhawatpushpendar@gmail.com

पीत शिरा रोग (यलो वेन मोजैक वाइरस)

लक्षण: यह भिण्डी की सबसे महत्वपूर्ण एवं अधिक हानि पहुचानें वाली विषाणु जनित बीमारी है जो सफेद मक्खी दवारा फैलती है संक्रमण जल्दी होने पर 20-30 प्रतिशत तक उपज मे हानि होती है। तथा इस रोग के लक्षण पौधो के सभी वृध्दि अवस्था मे दिखाई देती है। पत्तियों की शिराएं पीली पडने लगती है। एवं पत्तियों मे एक जाल जैसी सरंचना बन जाती इसके बाद प्रकोप बढने पर पौधो सभी पत्तिया एवं फल भी पीले रंग के हो जाते है और पौधे की बढवार रुक जाती है।

प्रबंधन: जुन के अन्तिम सप्ताह या फिर जुलाई के पहले सप्ताह मे ही बीज की बुआई कर देनी चाहिए।

पीत शिरा रोग प्रतिरोधी किस्म लगाने चाहिए जैसे अर्का अनामिका, वर्षा उपहार, अर्का अभय, पूसा ए-4, प्रभनी क्रांति, आक्सी मिथाइल डेमेटान 25 प्रतिशत ई.सी अथवा डायमिथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. की 5 मिली प्रति लीटर पानी में अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस.एल. अथवा एसिटामिप्रिड 20 प्रतिशत एस. पी. की 5 मिली./ग्राम मात्रा प्रति 15 लीटर पानी

चुर्णिल आसिता

लक्षण: इस रोग में भिंडी की पुरानी निचली पत्तियों पर सफेद चूर्ण युक्त हल्के पीले धब्बे पडने लगते है। ये सफेद चूर्ण वाले धब्बे काफी तेजी से फैलते है।

प्रबंधन: इस रोग का नियंत्रण न करने पर पैदावार 30 प्रतिशत तक कम हो सकती है। इस रोग के नियंत्रण हेतु घुलनशील गंधक 5 ग्राम मात्रा अथवा हैक्साकोनोजोल 5 प्रतिशत ई.सी. की 1.5 मिली. मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर 2 या 3 बार 12-15 दिनों के अंतराल पर छिडकाव करना चाहिए

आर्द्र गलन

लक्षण: ठण्डी एवं वर्षा वाले मौसम बादल, अधिक नमी, नम एवं कठोर मिटटी इस तरह की समस्या होने पर यह रोग अधिक फैलता है इस रोग के कारण पौधो की अंकुरण क्षमता कम हो जाती है। तथा पौधे उगते ही या उगने से पहले ही मर जाते है।

पौधे के तने का वह जहा से वह मिटटी के जुडा रहता उसी स्थान ने घाव बनने के कारण पौधे मर जाते है। इस रोग का फैलाव मिटटी मे पाये जाने वाले फफुंद पाइथियम या राईजोक्टोनिया तथा पर्यावरण स्थिति पर निर्भर करता है।

प्रबंधन: आवश्यकता से अधिक सिचाई नही करनी चाहिए।

ट्राइकोडर्मा विरीडी 3 ग्रा. प्रति कि.ग्रा. बीज दर से बीजोप्चार करना चाहिए।

डाइथेन एम-45 0.2 प्रतिशत एवं बैवस्टीन 1 प्रतिशत की दर से मिटटी मे मिलाने से इस रोग मे कमी आती हैं।

फ्युसेरियम विल्ट (म्लानी): यह रोग एक फफुद जनित रोग है जो लम्बे समय तक मिटटी मे बने रहते है। शुरूआत मे पौघे अस्थाई रूप से सूखने लगते है तथा बाद मे सक्रमण बढने पर पौधे की लताऐ एवं पतियाँ पीली पडने लगती है तथा कवक पौधे के जड प्रणाली पर आक्रमण करते जिससे पौधे मे जल सवंहन अवरूध्द हो जाता है जिससे पौधे पुर्णत; मर जाते है।

प्रबंधन: लगातार एक ही जगह पर भिण्डी की खेती नही करनी चाहिए।

फसल चक्र का प्रयोग करना चाहिए।

रोग अधिक दिखने पर केराथेन 6 ग्रा प्रति 10 ली. पानी या बैवेस्टीन 1 ग्रा प्रति ली. पानी मे मिलाकर 5-6 दिन के अंतराल मे 3 बार छिडकाव करना चाहिए।